प्रश्न ३—सिन्धु घाटी के नगरों के विषय में आप क्या जानते हैं ? वहाँ के निवासियों की सभ्यता की प्रमुख विशेषताओं का निरूपण कीजिए ।

अथवा

सिन्धु घाटी की सभ्यता का संक्षिप्त विवरण दीजिए ।

अथवा

सिन्धु सभ्यता के सामाजिक तथा आर्थिक जीवन की विशेषताओं का संक्षेप में वर्णन कीजिए ।

भारत का वैदिक काल के पूर्व का इतिहास अन्धकारमय प्रतीत होता था । किन्तु अभी कुछ वर्षों पूर्व सिन्धु नदी की घाटी में खुदाइयों के परिणाम-स्वरूप अतीत के कुछ ऐसे भग्न स्मारक प्राप्त हुये जिनसे यह सिद्ध हो गया है कि सिन्धु घाटी की सभ्यता वैदिक काल की सभ्यता से कहीं अधिक प्राचीन है ।

पुरातत्व विभाग के द्वारा सन् १९२२ ई० में खुदाई का कार्य सिन्धु प्रदेश में प्रारम्भ हुआ । मुल्तान जिले में हरप्पा नाम का जो टीला था उसकी जब पहले-पहल खुदाई हुई तो यह पता लगा कि हरप्पा नगर ईसा से ४००० वर्ष पुरानी सभ्यता का केन्द्र था । सिन्धु प्रदेश में अनेक नगरों की खुदाई हुई है । इन्हीं के आधार पर सिन्धु घाटी की सभ्यता का इतिहास प्रस्तुत किया गया है । अब गुजरात तथा राजस्थान में भी इस सभ्यता के बड़े केन्द्र मिले हैं ।

(१) हरप्पा

यह पंजाब के मुल्तान जिले में स्थित है । कुछ लोग सिन्धु घाटी की सभ्यता को हरप्पा–सभ्यता भी कहते हैं । प्राचीन काल में यहाँ एक विशाल नगर था परन्तु कालचक्र की चपेट में वह नष्टप्राय हो गया । सन् १९२२ ई० में राय बहादुर दयाराम साहनी ने यहाँ पर उत्खनन कराया । बाद में सर जान मार्शल के निरीक्षण में खुदाई हुई ।

(२) मोहनजोदड़ो

हरप्पा से ४०० मील दूरी पर वर्तमान सिन्धु प्रदेश में यह नगर स्थित है । यहाँ पर खुदाई का कार्य प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता श्री राखलदास बनर्जी ने सन् १९२२ ई० में प्रारम्भ किया था । बाद में भी खुदाई का कार्य जारी रहा ।

(३) चहुँदड़ों तथा अन्य नगर

मोहनजोदड़ो से ८० मील दक्षिण-पश्चिम में चहुँदड़ो नाम का नगर बसा था ।

रूपड़ (पंजाब) व लोथल इस सभ्यता के अन्य प्रमुख नगर हैं। (गुजरात) तथा

सिन्धु सभ्यता की प्राचीनता

जब तक सिन्धु घाटी की सभ्यता का ज्ञान नहीं था तब तक विद्वानों की यह धारणा थी कि मिस्र तथा बेबीलोनिया आदि की सभ्यता की भाँति भारत प्राचीनतम सभ्यता का केन्द्र नहीं था। लोग आर्य सभ्यता को ही भारत की प्राचीनतम सभ्यता समझते थे। किन्तु मोहनजोदड़ो और हरप्पा नामक स्थानों में उत्खनन द्वारा एक प्राचीन विकसित सभ्यता का ज्ञान हुआ। यही सभ्यता सिन्धु घाटी की सभ्यता कही जाती है। गार्डन चाइल्ड कहते हैं, "मिस्र और बेबीलोनिया की भाँति भारत में भी स्वतन्त्र और विशिष्ट सभ्यता का जन्म हुआ जो अपने समय की अन्य सभ्यताओं के मुकाबले में सर्वश्रेष्ठ थी। इस सभ्यता ने भारत में अपनी जड़ें जमा ली थीं। यह सभ्यता विशेष रूप से भारतीय थी जो आधुनिक भारतीय संस्कृति का आधार थी।"

"India confronts Egypt and Babylonia and by the third milliennum B. C. with a thoroughly individual and independent civilisation of her own."
—Gordon Childe.

सिन्धु घाटी की सभ्यता के निर्माता उसी जाति के लोग थे जिन्होंने पश्चिमी एशिया के कुछ देशों में भी सभ्यता का प्रसार किया था। इस मत पर हाल का कथन है, "इस बात में कोई सन्देह नहीं कि भारतवर्ष मानव सभ्यता के केन्द्रों में से रहा होगा और यह बात स्वाभाविक मालूम पड़ती है कि वह विचित्र जाति जो न सेमिटिक थी और जो आर्य जाति पूर्व से पश्चिम को सभ्य बनाने के लिए गई थी। हम यह अपनी आँख से देखते हैं कि सुमेरिया के लोग भारतवासी से कितना मिलते-जुलते हैं।"

"There is little doubt that, India must have been one of the earliest centres of human civilization and it seems natural to suppose that strange un-semitic. Aryan People who came from the east to civilise the west."
—Hall.

सामाजिक जीवन

सिन्धु घाटी के लोगों के सामाजिक जीवन का अध्ययन करने पर यह विदित होता है कि इनका सामाजिक जीवन अत्यन्त सुखमय था।

(१) नगर निर्माण

सिन्धु घाटी की सभ्यता-प्रमुख रूप से नगर सभ्यता थी और इसके केन्द्र मुख्यत: हरप्पा, लोथल तथा मोहनजोदड़ो थे। इन नगरों के खण्डहर यह सिद्ध करते हैं कि ये नगर एक निश्चित क्रम के अनुसार बनवाये गये थे नगरों की सड़कें काफी चौड़ी थीं और थोड़ी-थोड़ी दूर पर छोटी-छोटी गलियाँ बनी थीं। नगर की सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं।

(२) भवन निर्माण

नगर के मकानों का निर्माण भी योजनानुसार होता था। मकान पक्की इंटों के

बनते थे। दीवारों पर रंग और पलस्तर किया जाता था। बीच में आँगन होता था और उसके चारों ओर कमरे। मकानों में दरवाजे, खिड़कियाँ, स्नान-घर और कूड़ादान इत्यादि बने होते थे। कुछ घरों में कुआँ भी होता था। स्पष्ट है कि मकान बनाने, में स्वास्थ्य और स्वच्छता का विशेष ध्यान रखा जाता था। मकान की छतें लकड़ी, ईंटों से पटी होती थीं।

(३) नालियों का प्रबन्ध

इन नगरों में नालियों का अत्युत्तम प्रबन्ध था। इन नालियों द्वारा घरों का सारा गन्दा पानी सड़क के नीचे एक अन्य स्थान पर चला जाता था। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि नालियों का प्रबन्ध मिस्र और बेबीलोनिया में भी नहीं था। इस व्यवस्था पर विचार करते हुये गार्ड चाइल्ड ने लिखा है, "गलियों की सुन्दर पंक्तियाँ और नालियों का उत्तम प्रबन्ध और उसकी शतत् स्वच्छता इस बात का संकेत देती हैं कि यहाँ नियमित-नगर शासन था।"

(४) विशाल स्नानागार

प्रत्येक मकान में एक स्नानागार अवश्य होता था। मोहनजोदड़ो में एक सार्वजनिक स्नानागार भी मिला है जिससे पता चलता है कि यहाँ के निवासी स्नान के बड़े शौकीन थे। विद्वानों का अनुमान था कि ये लोग स्नान को धार्मिक कृत्य मानते थे और पर्व के अवसर पर सब लोग इस सार्वजनिक स्नानागार में स्नान करते थे। स्नानागार के चारों ओर बरामदे तथा कमरे बने थे। यह कुण्ड ३९ फीट लम्बा, २३ फीट चौड़ा और ८ फीट गहरा था। स्नानागार के गन्दे पानी के निकलने की तथा उसमें उतरने के लिये सीढ़ियाँ और स्नान करने के लिये चबूतरों की व्यवस्था थी। इस कुण्ड के समीप कमरे में एक कुआँ था जिससे इस कुण्ड में जल आता था। स्नानागार के समीप कुछ अन्य छोटे-छोटे स्नानागार भी थे। इनमें से कुछ में गर्म पानी का प्रबन्ध था। कार्लटन ने इस स्नानागार की तुलना समुद्रतट के आधुनिक होटल से की है।

"A swimming bath on a scale which would do credit to modern seaside hotel."
—Carlton

(५) निवासियों का रहन-सहन

सिन्धु घाटी सभ्यता के भग्नावशेषों से वहाँ के निवासियों के जीवन पर पर्याप्त प्रकाश पड़ता है। उनके शरीर के जो ढाँचे मिले हैं उनसे ज्ञात होता है कि लोग कुछ नाटे कद के तथा मजबूत होते थे।

(६) भोजन

यहाँ के निवासी शाकाहारी और आमिष भोजी दोनों थे। गेहूँ और जौ की रोटी वे लोग खास तौर से खाते थे। खजूर के कुछ बीज मिले हैं जिससे ज्ञात होता है कि वे लोग भोजन में खजूर का भी प्रयोग करते थे। दूध, फल तथा शाक-भाजी का भी उनके भोजन में समावेश था।

(७) वस्त्र

यहाँ के निवासी सूती और ऊनी दोनों प्रकार के वस्त्रों का प्रयोग करते थे। एक मुख की मूर्ति मिली है जिसमें वह शाल ओढ़े हुये है। स्त्रियाँ सिर पर एक विशेष प्रकार का वस्त्र पहनती थीं जो सिर के पीछे की ओर उठा रहता था। वे छोटा घाघरा पहनती थीं। यहाँ के लोग रंगीन वस्त्रों का भी प्रयोग करते थे।